ISSN-0975-2560

पारमिता

(वर्ष 10 अंक 10)

दर्शन परिषद् मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़
चरन् वै मधु विन्दति
स्थापना 1994

सम्पादक
डॉ. जय प्रकाश शाक्य

स्थानीय संपादक
डॉ. हरनाम सिंह अलरेजा

दर्शन परिषद 2020
(मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)
पंजीयन क्रमांक 04/14/01/08825/06
email:mpcgdarshanparishad@gmail.com

पुरूषार्थ चतुष्टय के आलोक में महात्मा गांधी का जीवन और दर्शन

डॉ. सत्यनारायण देवलिया
दर्शन शास्त्र विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर महाविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

भारतीय दर्शन में मानवीय जीवन पर विचार करते हुए इसके सर्वांगीण विकास एवं पूर्णता के लिए पुरूषार्थ व्यवस्था के सिद्धांत को अपनाया गया है। पुरूषार्थ व्यवस्था में उन सभी मूल्यों का समावेश होता है जिन्हे मानव प्राप्त करना चाहता है साथ ही वे मूल्य जिन्हें मनुष्य को प्राप्त करना चाहिए। जैसा कि हम सभी परिचित है मानव की पूर्णता के लिए चार पुरूषार्थ की अवधारणा है जो इस प्रकार है धर्म, नैतिक मूल्य, अर्थः धनसंपदा, इच्छा की भौतिक वस्तु। कामः मानसिक मूल्य सभी तरह की इच्छाएं कामनाऐ। मोक्षः आध्यात्मिक मूल्य। पुरूषार्थ व्यवस्था अपनाने से मानव के जीवन में तो शांति आनंद व पूर्णता तो आती ही है। समाज में भी सामंजस्य, समन्वय, व शांति स्थापित हो सकती है जिसे दर्शन के विद्धांन भली भांति जानते है। यहां हम चारों पुरूषार्थ के आलोक में गांधी जी के जीवन व दर्शन को समझने का प्रयास करेंगे, सही अर्थ में देखा जाए तो महात्मा गांधी ने पुरूषार्थ व्यवस्था की मात्र चर्चा न करके बल्कि व्यावहारिक जीवन मे उतार कर समकालीन समय में इसकी प्रासंगिकता का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया है। धर्म पुरूषार्थ और गांधीजी चारों पुरूषों में धर्म प्रथम पुरूषार्थ है अन्य पुरूषार्थ की नीव धर्म ही है। और नीति के बिना धर्म शून्य है। हम पूजा पद्धति के आधार पर किसी भी धार्मिक मत के अनुयाई हो सकते हैं नैतिक आचरण को व्यवहार में लाना प्रत्येक धर्म की अपेक्षा है। गांधीजी का भी मत है कि दुनिया के बडे धर्मो में जो नीति के नियम बताए गए है अधिकांश में एक ही है और उन धर्म प्रचार को ने यह भी कहा है कि धर्म की बुनियाद नीति है नीव को खोद डालिए तो घर अपने आप ढह जाएगा। वैसे ही नीतिरूपी नीव टूट जाए तो धर्म रूपी इमारत भी दो–चार दिन में ही टूट जाएगी। अतः धर्म और नीति को एक कहने में कोई अड़चन नही है। गांधीजी के अनुसार नीति सत्य और अहिंसा हैं उनके अनुसार अहिंसा से रहित नीति, नीति नही कही जा सकती है। उन्होंने सत्य और अहिंसा को अपने व्यावहारिक जीवन में अतार कर इसका प्रत्यक्ष उदाहरण दिया है और इसे सिद्ध करके भी बतलाया है। साध्य और साधन दोंनो की पवित्रता पर जोर देते हुए कहा कि हमारा साध्य तो शुभ होना ही चाहिए पर उसकी प्राप्ति का साधन भी उतना ही पवित्र होना चाहिए।

हमारे अन्य पुरूषार्थओं का आधार धर्म ही है जो नीति पर टिका है अतः हमें नैतिक रूप से सुंदर होना चाहिए गांधी जी ने समय की मांग के अनुसार इसीलिए एकादश व्रत के पालन की बात कही। अर्थ पुरूषार्थ और गांधीजी, गांधीजी ने धर्म के साथ–साथ अर्थ को भी उतना ही महत्व दिया। जीवन यापन के लिए हमें अर्थ अति अनिवार्य है अनिवार्य हमें अर्थ अति अनिवार्य है अनिवार्य है साध्य और साधन की पवित्रता के सिद्धांत के अनुसार उन्होने अर्थ की पवित्रता पर भी जोर दिया है। हमें अपने श्रम से ही अर्थ का उपार्जन करना चाहिए और इतने ही अर्थ का संग्रह करना चाहिए जो कि हमारे जीवन यापन के लिए आवश्यक है। इसी के परिपालन में उन्होंनं ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया। पूंजी पतियों को संपत्ति का स्वामी बनकर नही बल्कि उनके संरक्षण बनकर पूंजी का उपयोग करना चाहिए। व आवश्यकता से अधिक संपत्ति जरूरतमंदों की सेवा में लगानी चाहिए। गांधीजी का मत था कि प्रतयेक व्यक्ति उतना ही ले जितना कि उसे आवश्यकता है तो ना कोई भूखा रहेगा और न ही किसी को किसी वस्तु की कमी होगी। अपने आर्थिक विचारों में गांधीजी का मत है कि समस्त आर्थिक क्रियाओं का अंतिम लक्ष्य मानव के हितों की सेवा है। काम पुरूषार्थ और गांधीजी : काम को भी गांधीजी ने भारतीय दर्शनिक विचारधारा के अनुरूप उतना ही महत्व कदया है।